लोकगीत का महत्व एवं विशेषताएँ महाकौशल क्षेत्र की गोंड जनजाति विशेष सम्बन्ध में

पूजा दाहिया
शोध छात्रा
इतिहास विभाग
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय ,अमरकंटक

गोविंद पाण्डेय
शोध छात्र
इतिहास विभाग
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय ,अमरकंटक

सारांश :-

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में मध्य भारत के गोंडवाना साम्राज्य का अद्वितीय स्थान रहा है , जिसने प्रारंभ में तो स्वतंत्र सत्ता स्थापित की किंतु बाद में समय के प्रभाव व परिस्थितियों के वशीभूत होकर पहले मुगल सत्ता से तत्पश्चात मराठा सत्ता से स्वयं के अस्तित्व हेतु लगातार संघर्ष करता रहा | राम नगर से मिले शिलालेख के अनुसार यहाँ पर 52 राजाओं ने राज्य किया है | जिन्होंने अपने साम्राज्य के अस्तित्व की रक्षा हेतु लगातार लड़ाइयाँ लड़ी एवं राज्य की समृद्धि हेतु कार्य भी किए संस्कृति संरक्षण की इस कड़ी में साहित्य एवं लोक गीतों का भी अत्याधिक योगदान रहा | यह गीत सामाजिक परिस्थितियों , सम-सामायिक घटनाओं , सांस्कृतिक धार्मिक मान्यताओं , देवी- देवताओं की पूजा पद्धति, पर्व उत्सव त्यौहार जैसे विशेष अवसरों की पृष्ठभूमि से निर्मित होते थे | गोंडी लोक साहित्य में लोकगीतों की संख्या अनगिनत है यह वस्तुतः मौखिक रूप में पाए जाते है | यह लोक गीत आज भी समाज की जड़ो में रचे बसे है और जनजातीय लोक संस्कृति को बयां करते है | यह लोकगीत हर सुअवसर पर गाये बजाये जाते है | जैसे वीर गाथाएं, कृषि गीत, लूट खसोटे के गीत, मद्य निषेध के गीत, अल्प बचत का लोक गीत, राजनीति के लोकगीत आदि| परंतु साहित्यिक संपदा में ऐसे बहुत कम ही प्रमाण हमें प्राप्त होते हैं , जिससे गोंडवाना साहित्य के बारे में किसी प्रकार की जानकारी प्राप्त हो सके| अतः शोध पत्र का उद्देश्य उन गीतों को सामने लाना है जो उस बदलते दौर में स्वयं की अस्मिता की रक्षा करने में सहायक सिद्ध हुए | लोकगीतों के बारे में विचार व्यक्त करते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था "लोकगीतों में "लोकगीतों में धरती गाती है, पहाड़ गाते, फसलें गाती है, उत्सव और मेले, ऋतुएं और परम्पराएँ भी गाती है"|

कूट शब्द :- लोकगीत, गोंडी लोकगीत , रानी दुर्गावती, गोंडी साहित्य सम्पदा |

प्रस्तावना:-

भारत का ह्रदय गाँव में निवास करता है क्योंकि यहाँ की सभ्यता संस्कृति ही भारत को भारत बनती है | यहाँ कण- कण में रची बसी परम्पराएँ, प्रथाएं, रीति-रिवाज़, बोली-भाषा , रहन-सहन, खान-पान, गीत-संगीत कला जीवन स्तर, वैवाहिक पधातियाँ धार्मिक मान्यताओं एवं कृषि आधारित लोकगीत सुनने को मिलते है | ये लोकगीत स्थान विशेष की पहचान होते है | मध्य प्रदेश के चार प्रमुख अंचलों में यह गीत अलग - अलग है | मसलन बुंदेलखंड में आल्हा, बम्बुलिया, बुंदेला,देवरी, जगदेव का पुवारा, ढोलामारू, बघेलखंड में विदेशिया, बिरहा, दादर, सुआ, बसदेवा, मालवा में मालवी, बरसाती,, संजा हीड और भरथरी गायन और निमाड़ निर्गुनिया, नागपंथी, कलगीतुर्रा, संतसिंगा जी, मसांडयां, फाग ,गरबा, गरबी, गबलन आदि | यह लोकगीत चार प्रमुख अंचलों के हिसाब से है परन्तु इसके अलावा भी अनेक ऐसे क्षेत्र है, जहाँ लोकगीत की स्वयं की एक विशिष्ट पहचान है और यह लोकगीत आज भी इन ग्रामीण क्षेत्रों में अवसरों पर गाये जाते हैं | गोंड जनजाति के पर्व या त्यौहार जैसे बिदरी, बकबंधी, हरढील, नवाखानी, जवारा , मड़ाई , छेरता , दीपावली एवं होली इत्यादि में इनकी अपरिहार्य भूमिका होती है |

लोकगीत क्या है ?

"मानव हृदय का भाव-विलास अपनी उत्कट स्थिति में लयात्मक कारी हावरोहों में जब भाषा- बद्ध होकर प्रवाहित होने लगा तो शब्द शास्त्रियों ने उसे गीत कहा और इसी गीत परम्पराकी एक धारा जब अपनी देशज बोलियों में (अपनी घरेलु भाषा) लोकवाणी को प्रवाहित करने लगी तो उसे लोकगीत के नाम से नामित किया गया" | लोक में व्याप्त ऐसे अकृत्रिम और वास्तविक गीत जिसमे भाषा और शब्द स्थानीयता पर आधारित हो लोकगीत कहलाते है | किसी देश की वास्तविक संस्कृति जानने के लिए वहां के लोकगीतों का संकलन किया जाता है | इसलिए लोक साहित्य को संरक्षित करने में लोकगीतों का नितांत महत्व आवश्यक है | विदेशों में तो लोकगीतों के संरक्षन हेतु अनेक सोसाईटी और अकादमियों का निर्माण किया गया है जो इसका काम करती है | "लोकगीतों का सृजन सामूहिक चेतना द्वारा स्वाभाविक रीति से होता है, वह किसी निश्चित एवं नियंत्रित संगीतात्मक अथवा साहित्यिक प्रक्रिया का परिणाम नहीं है" | "लोकगीतों के संग्रह का सर्वप्रथम उद्योग पंडित रामनरेश त्रिपाठी ने किया" | इन्होंने गीतों का संग्रह कर इन देहातों और उपेक्षितों की संस्कृतियों की रक्षा करने का कार्य किया है | त्रिपाठी जी ने समस्त भारत की यात्रा कर स्वयं के खर्च पर किया | जिसे इन्होंने स्वयं की कविता कौमुदी के भाग 5 में ग्राम गीत के नाम से प्रकाशित किया है| "जैसे जैसे हमारा शिष्ट समाज पश्च्यात सभ्यता के प्रभाव से मुक्त हो रहा है वह अपने जीवन मूल्यों के प्रति सजग होता जा रहा है | वह अपने खेत खलिहानों, नदी नालों, वन पर्वतों, किसान मजदूरों, हरिजन अन्तज्यों , अशिष्ट और असंस्कृत लोगों की ओर देखने लगा है| उनके गीतोंमें अभिनय में उन तत्वों को खोजने लगा है जिनके सहारे वे सहस्त्राब्दीतक पीड़ित, शोषित, पददलित रहने पर भी जिंदा रह सके"|

लोक गीतों की विशेषताएँ

"यह लोकगीत तो जीवन की सहज क्रियाओं और व्यापारों में लीं जन समुदाय के निछचल ,सरल और स्वाभाविक भाव, गीतों के ओस बनकर उनके उनके कंठ स्वर में तैरने लगते है | खेत नदी पहाड़ पहाड़ मैदान घर सभी इसके निर्माण के स्थल है | हल चलते हुए, पशु चरते हुए, चक्की पीसते हुए बर्तन मांजते हुए प्रत्येक सामान्य कार्य व्यापार के समय इन गीतों का उदय हुआ है" | लोकगीतों में सरल स्वाभाविक प्राकृतिक जीवन की अभिव्यक्ति रहती है | लोग प्रकृति को आस्था एवं आनंद का केंद्र बिंदु मानकर अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते है | प्रकृति से सीधा संवाद इसके संबंधों को पुष्ट करता है | प्रकृति के समक्ष उनकी कल्पनाएँ साकार रूप लेती है | इसमें दो तरह के पक्ष होते है एक भाव पक्ष , एक हृदय पक्ष दोनों की प्रधानता होती है | इसमें लोक जीवन की कथाओं का निर्मल चित्रण होता है | "लोकगीत की एक- एक बहू के चित्रण पर रीतिकाल की सौ- सौ मुग्धाएं, खंडिताए और धाराएँ निछावर की जा सकती है, क्योंकि ये

निरंलाकर होने पर भी प्राणमयी है और वे अलंकारों से लदी होकर भी निष्प्राण है | ये अपने जीवन के लिए किसी शास्त्र - विशेष की मुखापेक्षी नहीं है और अपने आप में परिपूर्ण है" | लोकगीतों को रचने वालों की बौधिकता को नहीं मापा जा सकता न जाने वे कौन लोग होंगे और उन्होंने शब्दों को किस तरह गढ़ा होगा, किस तरह के शब्द संयोजन को प्रथमिकता दी होगी | यह सब एक शोध का विषय है कि यह लोकगीत कैसे परिष्कृत होते - होते आज तक जीवित बचे हुए है | लोकगीतों की विशेषता उनका अनोखापन, रसानुभूति, सरसता, सुन्दर काव्य, स्वाभाविक पन आदि है | इसमें काव्य का शुद्धतम रूप परिलक्षित होता है इसमें ऊँचे दर्जे की परिकल्पना भी निहित होती है | यह रसमय वात्सल्यमय हँसी ठिठोली और सुगमता युक्त होता है |

लोकगीतों के विविध रूप :-

लोक साहित्य के प्रथम चेता पंडित रामनरेश त्रिपाठी ने लोकगीतों का निम्नाकित रूप से वर्गीकरण उपस्थित किया है-

1.संस्कार सम्बन्धी गीत
2.चक्की और चरखे के गीत
3.धर्म गीत
4.ऋतु सम्बन्धी गीत
5.खेती के गीत
6.भिखमंगी के गीत
7.मेले के गीत
8.जाति गीत
9.वीरगाथा
10.गीतगाथा
11.अनुभव के वचन

त्रिपाठी जी वर्ग विभाजन में वैज्ञानिकता का अनुभव दिखता है इनकी खोज में वैज्ञानिक एवं प्रमाणिक न होकर संग्रह सुविधानुसार नाम भेद के आधार पर है | इसने वर्गीकरण में अनेक त्रुटियाँ होती है भिन्न - भिन्न वर्गो के गीत प्रायः एक ही वर्ग में शामिल किये जा सकते थे | जैसे खेती,भिखमंगी और मेले के गीतों को पृथक श्रेणियों में रखना आवश्यक नहीं है साथ ही वीर गाथा और गीत गाथा की एक ही श्रेणी हो सकती है | इसके अतिरिक्त बहुत से वर्गीकरण भी किये गये है जैसे राजस्थानी लोकगीतों के सन्दर्भ में श्री सूर्यकरण पारीख द्वारा इसमें भी नाम भेदात्मक प्रणाली अपने गयी है | पारीख जी द्वारा किये गये वर्गीकरण इसमें भी क्रमबध्ता का आभाव है | ब्रज भाषा के लोक साहित्य के प्रथम अध्येता डॉ. सत्येन्द्र एवं डॉ. कृष्ण देव उपाध्याय आदि द्वारा दिए गए विवरण | परन्तु गोंडी परिवेश के आधार पर यह वर्गीकरण उचित प्रतीत होता है इसलिए इसका वरन किया गया है.

प्रमुख गीत :-

गोंडी समुदाय द्वारा विभिन्न अवसरों में गए जाने वाले लोकगीत निम्न है:-गोंडी समाज में यह गीत अधिकतर प्रकृति परक, श्रृंगार परक व तत्कालीन परिस्थिति पर अधिक आधारित होते है| सुआ गीत अक्सर सुआ पक्षी के द्वारा भेजे जाने वाले गीतों पर आधारित होते है| सुआ गीत गाते समय एक चौड़ी सी टोकनी में सुआ के आहार के लिए धान की बालें अवश्य रखी जाती है| गोंडी गीत, प्रायः संयोग एवं वियोग श्रृंगार के गीत होते है|

सुआ लोकगीत:-

"पेंयां में लागूं चंदा सूरज के रे, सुआ रे
तिरिया जनम जनम झनि दे |
तिरिया जनम मोरे गउ के बराबर रे, सुआ हो
जहाँ पठ्वये जहां जाय |"

प्रस्तुत लोकगीत में विवाह उपरांत स्त्री पुरुष में परिवर्तित होने वाले सामाजिक भेदभाव को बतया गया है| एक आदिवासी महिला सुआ को संबोधित करते हुए अपने विचारों को व्यक्त करती हुई कहती है कि चंदा और सूरज मै तुम्हारे पैर पड़ती हूँ कि मुझे अगले जनम में लड़की का जनम न देना| महिला ने लड़की की तुलना गाय के बराबर की है और यह कहते हुए कहा है की जैसे गाय को जिस खूंटे से बाँधा जाता है वह सदैव उसमें ही बंधी रहती है ठीक उसी प्रकार जहाँ लड़की का बियाह किया जाता है उसे वहाँ जाकर रहना ही पड़ता है उसके अलावा कोई उपाय नहीं जबकि इसी सन्दर्भ में लड़का कभी अपने परिवार को छोड़कर नहीं जाता| यही भाव महिला सुआ गीत के माध्यम से कहने का प्रयास कर रही है|

कृषि गीत:-

"री रीना रीना री हलो रीना हो,
रीना ही हलो, हाय, कि सुआ हो, रीना री हलो, हाय |
बारी के तीर, बोथयुं झलर धान
हो हिरनागर,मिरग चरि जाय |
होंको रे भईया, अपने मिरग ला हो
मई मारो बिछुआ मंगाय, की सुआ हो
बिछुआ के मारे सर कति जाय हो
रक्तान के नदी बह जाए, कि सुआ हो
हिरनागर मिरग चरि जाये, सुआ हो|"

इस लोकगीत में फसल की सुरक्षा और हेतु चरने आने वाले जानवरों की हत्या का कारण बताई गयी है| महिला कहती है बारी के किनारे धान की फसल को चरने के लिए मृग आते है उसे हांको उसे भगाओ| उसे मार भागने के लिए बिछुआ मंगाया जाता है लेकिन दुविधा यह है की बिछुआ मारने से सिर कट जयेगा और खून की नदियाँ बहने लगेंगी| हिरन धान चरती जा रही है और ताकने वाला या ताकने वाली मृग को मारना चाहती है| इसी मारने की इच्छा का विरोध किया जा रहा है|

वीर रस प्रधान सुआ गीत

"लछिमन लाल तमाके उठि बोलिन
की सुअना हो, बोलो राजा वाचां संभार||
एसी सभा रघुनाथ विराजे
की सुअना हो, नहिं फवे गोठ तुम्हार||
धरती ला फोरि डारौं, चंदा ला टोरी डारौं,
कि सुअना हो, लानौ मैं पहार उखार||
सदेंसे धनुष ला, माखुर साहि मलिन्हों
कि सुआना हो , तब राघुवंस कुमार"||

यह सुआ गीत वीर रस प्रधान है| इसमें राजा जनक के प्रति लक्ष्मण के कोप का वर्णन है| जनक द्वारा श्री राम को वनवास दिए जाने पर छोटे भाई लक्ष्मण गुस्से में लाल हो उठे है वह कहते है तुम्हे रघुनाथ की भरी सभा नहीं सुहा रही है गुस्से में आगे वे कहते है की मैं इस धरती को फोड़ डालूँगा और चन्द्रमा को तोड़ डालूँगा या मैं पहाड़ को उखाड़कर फेंक दूंगा| मैं शिव के धनुष को तमाकू जैसे मसल डालूँगा लक्ष्मण के इस क्रोध की कल्पना, अभूतपूर्व है|

अनुराग गीत:-

"लाली गुलाली सीचंत आयौं|
तोर घार के दआरी पछत आयौं||
मारे तो मछँरी, उधेरे छिहरा|
कहाँ डारें चिरैया तबैं के चेहरा||
करिया तो धोती किनारी नहिं आं|

परदेसी तो भैं गये चिन्हारी नहिं आं||
खाल्हे खलौव हांका लें बरदी|
तोर जात है जुवानी सिंचाय ले हरदी||
लीली बछेरी में जीन कसना|
भगि जावे सकारे रेन बसना||
पानी तो बरसैं पातैरा ओधि
चुतुक हंस के तो देख ले हमार कोधी||
पथरा के मोती माटी के नह-डोर|
गारी बोली डै ले ले मायाला झिन टोर||
आमा के अमचूर कदम चटनी|
तोला गाड़ी में चढ़ाय के, ले जानह कटनी||
गगरी के पानी गरम करि लें|
तोर चढ़ती जुवानी धरम करि ले||
झीनी पिछौरी, उलटी खिलान |
कबें हो ही चिरौया, तेरे से मिलना"||

प्रस्तुत लोकगीत में 10 पद है इसमें हर के भाव अलग-अलग है| इस पूरे गीत में नायिका अपने नायक\ प्रेमी से स्नेह की आस लगाकर उसे मानाने का प्रयास करती है| इसमें दोनों के अनुराग का वर्णन है पहले पद में नायिका कह रही है कि वह अपने प्रेमी का घर नहीं जानती इसलिए उसका घर पूछते पूछते आई है उसका नाम बार बार लेने से अभी को उसका नाम पता चल गया है और सभी उसे चिढ़ा भी रहे है जिससे पूरे मार्ग का रंग लाल हो गया है| जब नायिका अपने प्रेमी के घर पहुँचती है तो तो प्रेमी उसकी दशा देखकर जो बखान करता है उसे दुसरे पद में समाहित किया गया है, दूसरे पद में नायक अपनी नायिका को उदास देखकर दु:ख प्रकट करता हुआ कहता है की तुम पहले बहुत आकर्षक थी, लेकिन इस विरह के कारण तुम निश्तेज़ हो गयी हो| इस पर प्रेमिका का स्पष्ट रुख दिखता है कि शायद उसका प्रेमी विदेश से लौटने के कारण उससे विमुख हो रहा है उससे उदासीनतादिखा रहा तीसरे पद में प्रेमी की इसी उदासीनता का वर्णन है| चौथे पद में प्रेमिका अपने प्रति प्रेमी में उत्पन्न हुई उदासीनता मिटाने हेतु प्रेमी से स्वयंवर स्वीकार करने की प्रार्थना कर रही है, वह कहती है की तुम्हारी उम्र अधिक होती जा रही है यदि तुम प्रार्थना स्वीकार करो तो मैं तुम्हारे उपर हल्दी सिंचवाकर स्वयंबर का दस्तूर पुरा कर दूं| पांचवे पद में प्रेमिका अपने प्रेमी के प्रति अधिक अनुराग महसूस करती है और प्रेमिका अपने से ही रात भर रुक जाने की प्रार्थना करती है| छठे पद में प्रेमिका अपने मन के विरह का सांकेतिक रूप में वर्णन करती हुई कहती है की जंगल के उस पार वर्षा हो रही है, जो दिखाई नहीं देती| प्रेमिका अपने प्रेमी से अनुराग चाहती है और कहती है की इसी प्रकार तुम हंस हंस कर देख लो, तुम्हारी प्रसन्नता को देखकर मेरा दिल खिल जायेगा| सातवे पाद में नायिका ने सांकेतिक रूप में कहा है कि यहाँ का मकान पत्थर का है जिसकी दीवारे मोटी और विशाल है परन्तु स्नानागार मिटटी का है| अपने प्रेमी के इस वर्ताव पर नायिका कहती है तुम मुझे ताने मार लो, गाली दे लो पर गुस्सा मत रहो| आठवे पद में नायक अपनी प्रेमिका के समक्ष भाग चलने का प्रस्ताव रखता है और कहता है की मैं तुम्हे रेलगाड़ी से चढ़ा का कटनी ले जाऊंगा वहां हम दोनों मजदूरी करेंगे| नवें पद में नायक अपनी प्रेमिका से या प्रेमिका अपने नायक से प्रेम व्यापार में स्वीकृति चाहते हुए जवानी के दिनों में धर्म और दान पुण्य की बात करने की बात कहता है की यही सही समय है धरम पुण्य करने का| दसवे पद में विरह की व्याकुलता प्रदर्शित की गयी है की अब कब मिलना होगा|

धन और ग़रीबी पर आधारित गीत :-

"लायेला रांपाछोले ला दूबी|
लेना देना कुछ नइये, मया हैं खूबी||
रायपुर शहर माँ बड़े बड़े सेठ|
चार पैसा के मिठाई मा भरे न पेट||
चना रे भाजी चटोरा चिखना|
कौन मेटे मोर गियां करम के लिखना"||

इस गीत में ग़रीबी की दशा का वर्णन किया गया है की कैसे किसी रायपुर शहर में बड़े बड़े सेठ है जिनके पास बहुत अधिक धन धन्य है नाना प्रकार की वो मिठाई खाते है| लेकिन वही ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के पास चना भाजी और नमक रोटी के अलावा कोई दूसरा उपाय नहीं है यही करम का लिखा बदा है|

उलाहना गीत :-

"आसों के अमली फरेला चपटी|
तोर मुख में माया , भीतर कपटी||
तिवरा के दार मा बनामे भाजी|
तोर मनमा हवय दगलबाज़ी||
चार के चरौता चराई तो दिन के|
कोलकी भाग्वैया, दुई तो दिन के
मन कतेंव सूत्री, उलट भांजेवडोर|
गारी झन देवे मामी, मई भांजा लागौं तोर"||

उपरोक्त गीत में मामी द्वारा भांजे पर किये जाने वाले अत्याचार का वर्णन है| भांजा अपनी मामी को कहता है की तुम मुख में माया रखती हो और अन्दर से कपट भाव रखती हो| आगे कहता है की तुम त्यौरा की दाल की भाजी बनाती हो मन में दगाबाजी रखती हो मुझसे इतना काम करवाती हो और मुझे गाली देती हो जबकि मैं तुम्हारा भानेज लगता हूं|

"तारी रे नाना, तारी नारी नाना रे।
तारी रे नाना, तारी नारी नाना। बारी कचरिया फरे लटी झोर रे।
भाभी के चुटका ला लेंगे देवर चोर।
देवर खों पकर पातों मार तों मूसर चार रे।
भाभी के बिंदिया ला देंगे देवर चोर रे।
छेवर खों पकर पातों मारतों मूसर चार रे"

भावार्थ-देवर और भाभी का इस गीत में मजाक है- बाड़ी में कचरिया खूब फली हुई है। भाभी की चुटकी को देवर चुरा कर ले गया। भाभी कहती है कि-देवर को पकड़ पाती तो चार मूसल मारती। भाभी की अँगिया को देवर चुराकर ले गया। भाभी कहती है कि देवर को पकड़ पाती तो चार मूसल मारती। भाभी की बिंदिया को देवर चुराकर ले गया। भाभी कहती है कि अगर देवर को पकड़ पाती तो चार मूसल मारती। इस प्रकार गीत के माध्यम से भाभी और देवर हास-परिहास व मनोरंजन करते है।

महत्व:- गोंड आदिवासियों का सम्पूर्ण जीवन लोकगीत लोकनृत्य लोक चित्रकल के लालित्य से भरपूर रहा है| यह जीवन में नयापन लाते है| इसमें कठिन से कठिन कार्य करने की नवीन प्रेरणा मिलती है| पर्वतों की कठिन चढ़ाई हो या घने जंगलों में विचरण लोकगीत के सहारे सारे पथरीले रास्ते सुगम मार्ग में बदल जाते है| आभावों के बीच हँसना, कठिनाइयों में मुस्कुराना, विपत्तियों के बीच झूम कर चलना, पर्वत के शिखर पर बैठकर मुरली बजाना, तप्ती गर्मी में आनंदमय होकर ढोल बजाना, सर्द मौसम में अगीठी के पास बैठकर प्रकृति प्रेम के गीत गुनगुनाना आभाव में भी स्वयं की मस्ती एवं हस्ती को जिंदा रखना, आदिवासियों से ही सीखा जा सकता है| साथ ही इनका उपयोग

मनोरंजन के लिए भी होता है| संस्कृति जीवन के विभिन्न पहलुओं का ज्ञान होता है| लोकगीतों और गाथाओं में इतिहास की प्रचुर सामग्री भरी पड़ी है इसमें स्थानीय इतिहास पुष्ट होता है और विस्मृत इतिहास में पूर्ण प्रकाश पड़ता है|

लोक साहित्य में सामाजिकता का वर्णन भी निहित होता है इतिहास के समृध ग्रंथो में भले ही में युद्ध प्रसंग वीरता और घटनाओं का वर्णन भले ही मील जाये परन्तु वास्तविकता को जानने हेतु धरातल पर उतरना होता है| बैरियर एल्विन के अनुसार लोकगीतों की सामाजिकता के निर्धारक तत्वों में से एक है| इनके अनुसार “ इनका महत्व इसलिए नहीं है की इनके संगीत, स्वरुप और विषय में जनता का वास्तविक जीवन प्रतिबिम्ब होता है| इसमें मानवशास्त्र के अध्ययन की प्रमाणिक एवं ठोस सामग्री हमे उपलब्ध होती है”| लोकगीतों में लौकिक सभ्यता, लौकिक आचार, लौकिक व्यवहार, लौकिक रीति रिवाज एवं परम्पराओं का प्रतिबिम्ब झलकता है|“ग्रामगीतों का समस्त महत्व उनके काव्य-सौन्दर्य तक ही सीमित नहीं है इनका एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य एक विशाल सभ्यता का उदघाटन जो अब तक या तो विस्मृति के समुद्र में डूबी हुई है या गलत समझ ली गई है| जिस प्रकार वेदों द्वारा आर्य सभ्यता का ज्ञान होता है, उसी प्रकार ग्राम गीतों द्वारा आर्य पूर्व सभ्यता का ज्ञान हो सकता है| ईट पत्थर के प्रेमी विद्वान यदि घ्रुपत्ता न समझे तो जोर देकर कहा जा सकता है की ग्राम गीतों का महत्व मोअन-जो-दड़ो से कहीं अधिक है| मोअन-जोदड़ो सरीखे भग्न स्तूप गरम गीतों के भाष्य का काम दे सकते है” |

लोकगीतों का महत्व :-

साहित्यिक महत्व : लोकगीत साहित्य का एक प्रमुख अंग जिसके माध्यम से हैं विभिन्न विषयों पर कविताएँ और कहानियों को प्रस्तुत किया जाता हैं। ये गीत लोक साहित्य को रचने बसने में के एक महत्वपूर्ण योगदान देते है इसके बिना साहित्य अधूरा हैं। सामाजिक संगठन के साथ एकता को बढ़ावा : लोकगीतों में समाज के हर धर्म समुदाय वर्गों स्ताऔर भावनाओं को सम्मलित किया जाता है जिससे समाज की तरक्की और वृद्धि होती है । ये गीत समाज में एकता और सामूहिक भावनाओं को बढ़ावा देते हैं।

जीवन की अनुभूतियों का अभिव्यक्ति : -

लोकगीतों के माध्यम से लोग अपनी जीवन की अनुभूतियों, संघर्षों, और सुख-दुख को साझा करते हैं। जिससे एकाकीपन समाप्त होता है|सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण : लोकगीतें संस्कृति और ट्रेडिशन को संजीवनी देती हैं। ये गाने विभिन्न घटनाओं, उत्सवों, और परंपराओं को साक्षात्कार करने का माध्यम होते हैं।

भाषा और साहित्य के विकास में योगदान : लोकगीत भाषा और साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये गाने विभिन्न भाषाओं और शैलियों को प्रस्तुत करने में मदद करते हैं।

संविधानिक महत्व :-

कई लोकगीत राष्ट्रीय या स्थानीय स्तर पर महत्वपूर्ण होते हैं, जैसे कि राष्ट्रगान। ये गाने एक सामाजिक और राष्ट्रीय एहसास का संवेदनशीलता बढ़ाते हैं।लोकगीतों का महत्व समाज में सामूहिक भावनाओं, सांस्कृतिक विरासत, और साहित्यिक विकास में विशेष होता है। ये गीत समृद्धि, सामाजिक समरसता और साहित्यिक समृद्धि का महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं। हमारे लोकगीत लोक जीवन के सारे तत्वों को उभारने वाले, उन पर प्रकाश डालने वाले है सीधे सादे सच्ची भावनाओं को प्रकट करने वाले गीत है|“लोकगीतों का अर्थ तो अत्यंत सीधा और सरल होता है”|“लोक साहित्य, लोक गीत, लोक नृत्य तथा लोक कला की ओर आकृष्ट होना, उनका पुनूल्यांकन करना उनके जीवित तत्वों से प्रेरणा लेना हमारी सदा गहरी होती हुई राष्ट्रीय चेतना का ही परिचायक है”|

लोकगीतों का संग्रह एवं चुनौती:-

गोंडजनजाति अत्यंत स्वाभिमानी होती है अतः उनमे सास ननद मोरी जनम की बैरन किस्म के लोकगीत बहुत कम मिलते है | शहरों में बैठकर देहाती जीवन की झलक, उसकी भाषा और संस्कृति का ज्ञान मिल सकता है परन्तु गीत संकलन हेतु कठिन तपस्या करनी पड़ती है| गाँव में जाकर गाँव वालों के हृदयों को स्पर्श करना पड़ता है, उनसे मेल जोल बढ़ाना पड़ता है, तब कहीं बहुत परिश्रम के बाद एकाध रत्न हाथ में लगता है| पुस्तकालयों में बैठकर का अध्ययन हो सकता है, संग्रह नहीं हो सकता|“लोकगीत एसी वस्तु नहीं है जिनका अध्ययन लोकजीवन से अलग रहकर बंद कमरे में बैठ कर किया जा सके | इन्हें समझने इनका मूल्य पहचानने इनकी सही व्याख्या क्र पाने के लिए हमे वहां जाना पड़ेगा उस लोक में जाना पड़ेगा जहाँ जाने से अग्नि देव भी इनकार करते है | इन गीतों में रमकर ही हीरा प्राप्त किया जा सकता है” | लोकगीतों का संग्रहण करते समय श्रृंगार परक गीत की उपलब्धता अधिक होती है, परन्तु यदि किसी खास व्यक्ति परक या घटनाओं पर आधारित गीतों का संग्रह करने का साहस दिखाया जाये तो अत्यंत मुश्किल होती है | इसमें ऐतिहासिकता और रस दोनों की कमी होती हैं| लोकगीत अब प्रायः लुप्त होते जा रहे हैं | इसका मुख्य कारण है आज का बदलता परिदृश्य तथा भौतिकतावादी युग| इन लोकगीत का प्रस्तुतीकरण साहित्य के माध्यम से किया जाता है| सामान्यतः लोक साहित्य दो प्रकार का होता है जो सामाजिक वातावरण के आयाम का चित्रण प्रस्तुत करता है|अच्छा साहित्य का संग्रहण तो फिर भी आसन होता है परन्तु गन्दा साहित्य समाज की बदनामी का कारक बनता है| इसी प्रकार लोकगीतों का संग्रह भी एक बड़ी चुनौती बना हुआ है|“सन 1866 में टेम्पल महोदय के उद्योग से रेंरेंड एस. हिस्लाप के लेखों का प्रकाशन हुआ| इन आलेखों का सम्बन्ध मध्य प्रदेश तथा मध्यभारत के आदिवासियों से था”|

निष्कर्ष :-

वर्तमान में लोक गायक अधिकांशतः बुजुर्ग वर्ग आते है इस कारण ज्यादातर युवा वर्ग विदेशी फ़िल्मी गीतों की तरफ अधिक आकर्षित होता है, फलस्वरूप लोकगीत क्षींण हो रहे है| इनके घटने का कारण यह है की आज भाषा की अज्ञानता वश यह आसानी से समझ में नहीं आ पाते|लोकगीतों हेतु स्थानीय स्तर पर प्रोत्साहन कम मिलना भी इसकी एक वजह है| न ही ऐसा कोई मंच बच है जो लोकगीतों को पनपने और विकसित होने का साधन प्रदान कर सके| लोकगीत एवं लोक साहित्य को लोग अनपढ़,अशिष्ट अटपटी ज्ञान विहीन कल्पना शून्य की तरह देखा जाता है| इसीलिए आज जब परम्परिक लोकगीत को सुअवसरों पर गाया बजाया जाता है तो यह कौतूहल प्रतीत होता है| तब ज्ञान होता है है की यह चीजे विचित्र सी लगने वाली चीज़े , मजेदार है, इसमें पर्याप्त मनोरंजन है| अतः नए गीतों के साथ पिछले गीत घुलते जाते है| नई पीढ़, नए भाव, यही गीतों की परंपरा है| गीतों में विज्ञानं की तराश नहीं, मानव संस्कृति का सारल्य और व्यापक भावों का उभार होता है| भावों की लड़ियाँ लम्बे - लम्बे खेतों की स्वच्छ पेड़ों की नयी डाली सी ‘रफ’ और मिटटी की तरह सत्य है”

****

संदर्भ सूची :-

शोध उत्कर्ष Shodh Utkarsh Online Available at https:// www.shodhutkarsh.com ISSN-2993-4648
वर्ष - 02 अंक– 07 जुलाई - सितम्बर -2024 Impact factor– 03

I.डॉ कपिल तिवारी, संपदा (म.प्र. की जनजातीय संस्कृति) पृ 1- 10
II.संपादक – लक्ष्मीनारायण गर्ग – लोक संगीत अंक, पृष्ठ संख्या - 99
III.चौहान, विद्या, लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रगति प्रकाशन, आगरा, पृ ७३
IV.उपाध्याय डॉ कृष्णदेव , भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, अक्तूबर १९६०
V.चौहान, विद्या, लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रगति प्रकाशन, आगरा, पृ ७४
VI. उपाध्याय डॉ कृष्णदेव , भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, अक्तूबर१९६०, पेज न.64
VII.हिंदी मंदिर, प्रेस प्रयाग सन १९२९ में प्रकाशित
VIII.हिंदी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद, १९५९, पेज न. 6
IX.चौहान, विद्या, लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रगति प्रकाशन, आगरा, पृ ७४
X.पंडित हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका, पृ १३८
XI.कविता- कौमुदी, भाग , पृ ४५
XII.चौहान, विद्या, लोकगीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रगति प्रकाशन, आगरा, पृ. ९९
XIII.वही पृ १०३-१०५
XIV.अग्रवाल, रामभरोस,गोंड जाति का सामाजिक अध्ययन गोंड, संस्कृति,इतिहास , गोंडी पब्लिक ट्रस्ट, मंडला, पृ.182
XV. वही 183
XVI.वही 184
XVII.वही 187
XVIII.वही 188
XIX.वही 191
XX. वही 191
XXI.डॉ कपिल तिवारी, संपदा (म.प्र. की जनजातीय संस्कृति परम्परा का साक्ष्य) पृ ३७६
XXII.उपाध्याय डॉ कृष्णदेव , भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय वाराणसी, अक्तूबर१९६०
XXIII.Folk song ofMechelHillsintroduction p.16
XXIV.छत्तीसगढ़ी, लोकगीतों का परिचय,श्यामाचरण दुबे की भूमिका से उदत्त
XXV.हिंदी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद, १९५९, पेज न. 8
XXVI.वही पेज न 5
XXVII.वही पेज 8
XXVIII.हिंदी साहित्य प्रेस, इलाहाबाद, १९५९, पेज न. 3
XXIX.श्याम परमार : भारतीय लोक साहित्य, पृ. ३३

तुलसी के राम

डॉ. निशा पटेल
(नेट-जे.आर.एफ.) अतिथि विद्वान (हिन्दी विभाग)
अ.प्र. सिंह विष्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

स्वामी रामानंद जी की शिष्य परंपरा के द्वारा एक के बड़े भाग में राम भक्ति की पुष्टि निरंतर होती आ रही थी। भक्त लोग फुटकल पदों में राम की महिमा गाते आ रहे थे, पर हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में इस भक्ति का परमोज्ज्वल प्रकाश17वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में गोस्वामी तुलसीदास जी की वाणी द्वारा स्फुटित हुआ। रामभक्ति का वह परम विषद साहित्यिक संदर्भ इन्हीं भक्ति शिरोमणि द्वारा संगठित हुआ जिसमें हिन्दी काव्य की प्रौढ़ता के युग का आरंभ हुआ।

लोकधर्म और भक्तिसाधना को एक में सम्मिलित करके दिखाया उसी प्रकार कर्म ज्ञान और उपासना के बीच भी सामंजस्य उपस्थित किया। रामचरितमानस में बालकाण्ड में संत समाज का जो लम्बा रूपक है वह इस बात को स्पष्ट रूप में सामने लाता है। भक्ति की चरम सीमा पर पहुँचकर भी लोकपक्ष उन्होंने नहीं छोड़ा। लोकसंग्रह का भाव उनकी भक्ति का एक अंग था। यही कारण है कि इनकी भक्ति रसभरी वाणी जैसी मंगलकारिणी मानी गई वैसी और किसी की नहीं। आज राजा से रंक तक के घर में गोस्वामी जी का रामचरितमानस विराज रहा है। रामचरितमानस में नाम और रूप दोनों को ईश्वर की उपाधि कहकर वे उन्हें उसकी अभिव्यक्ति मानते हैं-

''नाम रूप दुई ईस उपाधि। अकथ अनादि सुसामुझि साधी।
नाम रूप गति अकथ कहानी। समुझत सुखद न परति बखानी।।''

रचनाकौशल प्रबंध पटुता, सहृदयता इत्यादि सब गुणों का समाहार हमें रामचरितमानस में मिलता है। कथा के मार्मिक स्थलों की पहचान। अधिक विस्तार हमें ऐसे ही प्रसंगो का मिलता है, जो मनुष्य मात्र के हृदय को स्पर्ष करने वाले हैं- जैसे जनक की वाटिका में राम-सीता का परस्पर दर्शन, राम वन गमन, दशरथ मरण, भरत की आत्मग्लानि, वन के मार्ग में स्त्री-पुरुषों की सहानुभूति युद्ध में लक्ष्मण को शक्ति लगना इत्यादि। जिस धूमधाम से मानस की प्रस्तावना चली है, उसे देखते ही ग्रंथ के महत्व को आवास मिल जाता है। उससे साफ झलकता है कि तुलसीदास जी अपने ही तक दृष्टि रखने वाले भक्त न थे संसार को भी दृष्टि फैलाकर देखने वाले भक्त थे। जिस भक्त जगत् के बीच उन्हें भगवान् के रामरूप की कला का दर्शन कराना था पहले चारो ओर दृष्टि दौड़ाकर अनेक रूपात्मक स्वरूप को उन्होंने सामने रखा है।

राम के प्रामाणिक चरित द्वारा वे जीवन भर बना रहने वाला प्रभाव उत्पन्न करना चाहते थे और काव्यों के समान केवल अल्पस्थायी रसानुभूति मात्र नहीं। सम्पूर्ण विश्व जिस राम की अराधना में लगा हुआ है,वह राम आयोध्या का राजा या राजकुमार नहीं है, मानव का महामानव में परिवर्तन होना एक बहुत बड़े आश्चर्य की बात होती है। राम का जो भव्य और विराट स्वरूप हम सभी के सामने है, वह उन्हें बनवास अवधि से ही प्राप्त हुआ है। प्रतिकूलता में अनुकूलताएँ खोजना धार के विपरीत तैरकर किनारा प्राप्त करना सर्वस्व त्यागकर कम में ही अपनी भूख-प्यास बुझाना संघर्ष में ही अपना आराम देखना,ये अद्भुत व्यक्तित्व ही राम को श्रीराम बनाता है। सन्यासी वेश होना,नग्न पाद, शीत, धूप, बरसात में चलते जाना सामने आये भौतिक सौन्दर्य को तिलांजलि देना चरण में आये हुये को शरण देना जो श्रापित है उनका उद्धार करना, जो उनके दर्शन के इच्छुक है उनकी इच्छाएं शांत करना यह मणि कंचन रूप का व्यक्तित्व महिमामई राम का है, जो उन्हें दण्डक वन से मिला है। इसलिए मैथलीशरण गुप्त ने उन्हें ईष्वर होते हुए भी मानव के रूप में देखा है, और कहा है संदेश यहाँ का नहीं, स्वर्ग का लाया इस धरती को ही स्वर्ग बनाने आया। अपने विराट व्यक्तित्व के माध्यम से राम ने स्वयं में मर्यादा, विनम्रता, अनुशासन, दूसरे का सम्मान और शत्रु का नास, मित्र की रक्षा, जंगल में मंगल यनी लोकमंगल अपना विशिष्ट ध्येय बनाया,